28 / 12 / 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

एकाग्रता की विधि द्वारा

सिद्धि स्वरूप होने का अनुभव

➢➢ एकाग्रता और सिद्धियों का अनुभव

➳ _ ➳ मैं संगम युगी ब्राह्मण आत्मा

→ तपस्या कर रही हूं

→ तीव्र पुरुषार्थ की राह खोज रही हूं

- सदा सिद्धि स्वरूप बनने के लिए
- सर्व सिद्धि स्वरूप बनने के लिए

➳ _ ➳ मैं एकांत वासी आत्मा

→ एक के अंत में खोई हुई आत्मा

→ मैं और मेरा बाबा

- बाबा के साथ श्रेष्ठ संकल्प का निर्माण कर रही हूं

→ मैं श्रेष्ठ संकल्प में स्थित हो गई हूँ

- मैं एकाग्रता का अनुभव कर रही हूं
- एकाग्रता मेरी नैचूरल नेचर बन रही है

➳ _ ➳ मैं निरंतर योगी आत्मा एकाग्र चित्त हो गई हूं

→ मुझे हर दृश्य

- स्पष्ट नजर आ रहा है

→ स्व का स्वरूप.. आत्मा का स्वरूप स्पष्ट हो गया है

→ बाबा का स्वरूप भी स्पष्ट दिख रहा है

→ हर वस्तु जो है जैसी है स्पष्ट है

→ मेरे हर क्वेश्चन समाप्त हो गए हैं

→ सर्व प्रकार की हलचल समाप्त हो गई है

→ मेरी एकाग्रता

- आकर्षित कर रही है अन्य आत्माओं को
- उन्हें भी एकाग्रता का अनुभव हो रहा है
- सर्व की हलचल समाप्त हो रही है

➳ _ ➳ एकाग्रता के गुण को धारण कर मैं आत्मा

→ एकरस हो गई

→ मेरा हर संकल्प

- शक्तिशाली है

→ मेरा हर संकल्प

- सिद्ध हो रहा है

→ मेरा हर संकल्प

- फलदायक है

→ मेरे संकल्प बोल कर्म सब समर्थ हो रहे हैं

→ मैं सिद्धि स्वरूप बन रही हूँ

➳ _ ➳ मैं तीव्र पुरुषार्थी आत्मा

→ एकाग्रता की विधि सहज विधि

■ यही मेरे पुरुषार्थ की विधि

→ मैं सर्व शक्तियों का अनुभव कर रही हूँ

→ मैंने सर्व शक्तियों की सिद्धि प्राप्त कर ली है

→ मैं सिद्धि स्वरूप आत्मा हूँ